

भारत का पहला भारतीय संग्रहालय कोलकाता अद्भुत संग्रह के लिए कहा जाता है मैजिक हाउस



कोलकाता के हावड़ा जंक्शन से 4 कि.मी. दूर स्थित जवाहरलाल नेहरू रोड, पार्क स्ट्रीट स्थित भारतीय संग्रहालय एशिया का सबसे पुरान एवं भारत के सर्वश्रेष्ठ संग्रहलों में से एक है। संग्रहालय में 4 हजार वर्ष प्राचीन जीवाश्म, कलश में बुद्ध की अस्थियों के अवशेष, प्राचीन वस्तुएं, ममी, युद्धसामग्री, आभूषण, कंकाल, प्राचीन सिक्के, दुर्लभ मुगल शैली के चित्र, उल्का पिंड आदि प्रदर्शित किये गए हैं। यहाँ 5 वीं से 17 वीं शताब्दी की प्राचीन वस्तुओं का संग्रह दर्शाया गया है। मिस्र की ममी 4,000 साल पुरानी है, जिसे दर्शक कौतुक से देखते हैं। सीढ़ियों के शीर्ष पर युवा रानी विक्टोरिया की मार्शल वुड की मूर्ति खड़ी है। संग्रहालय को 6 खंडों की 35 दीर्घाओं में और दो चित्रशालाओं में सजाया गया है। करीब 8 हजार वर्ग मीटर क्षेत्र में स्थित इस संग्रहालय की स्थापना 1814 ई. में एशियाटिक सोसाइटी ऑफ बंगाल द्वारा 1784 ई. में सर विलियम जोन्स द्वारा की गई थी। वर्ष 1857 में भारतीय संग्रहालय का अपना निजी भवन बना तथा 1883 ई.में इसमें चित्रशाला की स्थापना की गई।

संग्रहालय के मानवशास्त्रीय खंड में विभिन्न जनजातियों की वेशभूषा, आभूषण और उपकरणों जैसी कई वस्तुओं को प्रदर्शित किया है और भारत के आदिवासी और गैर-आदिवासी दोनों के सांस्कृतिक जीवन के बारे में जानकारी देता है। एक गैलरी में दुर्लभ संगीत वाद्ययंत्रों का प्रदर्शन भी किया गया है। भूवैज्ञानिक खंड में व्यापक भूवैज्ञानिक धारा में 80 हजार से अधिक नमूने हैं, जो चार दीर्घाओं में उल्कापिंडों, कीमती पत्थरों, सजावटी इमारत के पत्थरों, चट्टानों और खनिजों और जीवाश्मों की किस्मों को प्रदर्शित करते हैं। जीवाश्म और टैक्सीडर्मी से निपटने वाले खंड उल्लेखनीय हैं। प्रागैतिहासिक जानवरों और एक विशाल डायनासोर कंकाल के कई अद्वितीय जीवाश्म कंकाल हैं। उनमें से सबसे दिलचस्प एक विशालकाय मगरमच्छ और आश्चर्यजनक एक बड़ा कछुआ हैं। प्राकृतिक खंड में चिकित्सा, वानिकी, कृषि और कुटीर उद्योग पर प्रभाव डालने वाले कई वनस्पति नमूने प्रदर्शित किए गए हैं।

पुरातात्विक खंड में देश और विदेश से पत्थर-युग की कलाकृतियों का संग्रह प्रदर्शित है। मोहनजोदड़ो, हड़प्पा आदि से पूर्व ऐतिहासिक पुरावशेष इस खंड की कुछ दीर्घाओं में भरहुत, मिस्र, सिक्के, ओरिसन कला और गांधार कला के नमूने प्रदर्शित किए गए हैं। भरहुत गैलरी अलग से है जिसमें सर अलेक्जेंडर

कनिंघम द्वारा 1874 में मध्य प्रदेश के भरहुत से खोदे गए बुद्ध के जीवन के दृश्यों को दर्शाती नक्काशी और मूर्तियों के साथ बौद्ध स्तूप की रेलिंग और प्रवेश द्वार को प्रदर्शित करती है। बुद्ध की राख से युक्त फूलदान भी है जिसके कारण संग्रहालय का महत्व बढ़ गया है। गांधार गैलरी में गांधार क्षेत्र और अन्य पत्थर की मूर्तियों से बौद्ध मूर्तियों का सबसे अच्छा संग्रह है। मिस्र की गैलरी में 4000 साल पुरानी 'भम्मी', मूर्तियां, पेंटिंग आदि महत्व के प्रदर्शन हैं। सिक्का गैलरी में 5 वीं शताब्दी ईसा पूर्व के सिक्कों का संग्रह है, जो कनिष्क, समुद्रगुप्त, कुमारगुप्त, अकबर और जहाँगीर द्वारा जारी किए गए सोने के सिक्कों को प्रदर्शित किया गया है।

संग्रहालय के समृद्ध कला खंड की गैलरी में चीन, जापान, बर्मा, नेपाल और तिब्बत आदि के टेक्सटाइल, पेंटिंग और सजावटी कला के प्रदर्शन शामिल हैं। कला खंड में प्रदर्शित नेपाली और तिब्बती मंदिर के बैनर, धातु के चित्र, मुग्ध माल, बिडरवार, आभूषण, चांदी के माल, कांच के बर्तन, मिट्टी के बर्तन, हाथी दांत और हड्डी कारीगरी के नमूने शामिल हैं। चित्रकला गैलरी में मुगल, लघु चित्रकारी, कांगड़ा-कलम पेंटिंग, बंगाल से कालीघाट पाटस और बंगाल के प्रसिद्ध चित्रकारों के चित्र प्रदर्शित किए गए हैं। 15 वीं से 19 वीं शताब्दी के नेपाली और तिब्बती थैस के संग्रह के साथ, कपड़ा गैलरी में ढाका की मलमल और जामदानी, पंजाब के फारसी कालीन, पंजाब के फुलकारी काम, बंगाल से कांथा काम, हिमाचल में चंबा से अफवा (रूमाल) आदि प्रदर्शित किए गए हैं। दक्षिण पूर्व की एशियाई गैलरी में चीन-जापान, बर्मा और नेपाल-तिब्बत की कलाकृतियों के लिए तीन अलग-अलग गैलरी हैं। चीन-जापान आर्ट गैलरी में रंगीन पोर्सलेन, वाइन कप, आइवरी और गैंडे के सींगों पर नक्काशीदार लेख, पेंटिंग आदि हैं। बर्मी गैलरी में पीतल और कांसे की आकृतियाँ, वुडकार्विंग, सिल्वर और लोहे के बर्तन की वस्तुओं को प्रदर्शित किया गया है जिसमें जातक के चित्र, रामायण के दृश्य हैं। नेपाल-तिब्बत गैलरी में 9 वीं से 19 वीं शताब्दी के कांस्य के आंकड़े और लकड़बगघा, मानव हड्डियों से बने एप्रन, मक्खन-दीपक, गहने आदि हैं। संग्रहालय में संग्रहित वस्तुएँ इतनी अद्भुत हैं कि स्थानीय लोग इसको "जादू घर" या मैजिक हाउस कहते हैं।

भारतीय संग्रहालय की लाइब्रेरी कई दुर्लभ प्रकाशनों के साथ कुछ 50,000 पुस्तकों और पत्रिकाओं के विशाल संग्रह को प्रदर्शित करता है। संग्रहालय, पुरातत्व, नृविज्ञान और कला आदि पर पुस्तकें और पत्रिकाएँ उपलब्ध हैं। भारतीय संग्रहालय को भारत के संविधान में राष्ट्रीय संस्था के रूप में महत्व प्राप्त है। यह भारतीय संस्कृति और विरासत के विशिष्ट प्रमाणों के दर्शन कराता है। हमारे देश के समृद्ध इतिहास की जानकारी पाने के लिए भारतीय संग्रहालय एक उत्तम स्थान है। यह कह सकते हैं कि भारत का प्रथम संग्रहालय समस्त प्राचीन युगों के जीवन और संस्कृति को प्रकट करता है। संग्रहालय सोमवार और सार्वजनिक छुट्टियों में बंद रहता है। मार्च से नवंबर तक सुबह 10 बजे से शाम 5 बजे तक एवं दिसंबर से फरवरी तक सुबह 10 बजे से शाम 4.30 बजे तक खुला रहता है।

(लेखक वरिष्ठ पत्रकार हैं व राजस्थान जनसंपर्क विभाग के सेवा निवृत्त अधिकारी हैं)

